प्रदर्शन कला में स्नातकोत्तर (मास्टर ऑफ परफार्मिंग आर्टस एम0पी0ए0) की पाठ्यक्रम परियोजना आख्या

1. उद्देश्य – दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य उस विशिष्ट वर्ग विशेषकर कमजोर वर्ग, जो दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहता है, व्यस्कों, गृहणियों तथा नौकरीपेशा लोगों तक शिक्षा(उच्च शिक्षा) पहुँचाना है जो सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य कारणों से शिक्षा(उच्च शिक्षा) से वंचित हैं या बीच में ही शिक्षा छोड़ चुके हैं। शिक्षा की यह पद्धति पेशेवर लोगों को उनके अपने ज्ञान को अद्यतन करने, नए व्यवसाय और विषयों का चुनाव करने में सक्षम बनाती है तथा साथ ही उनको आजीविका(Career) में उन्नति के लिए योग्यता बढ़ाने का अवसर भी प्रदान करती है। संगीत के इस पाठ्यक्रम के उद्देशय हैं :-

- संगीत विषय की विविध विधाओं तथा शास्त्र का सघन ज्ञानार्जन द्वारा विशेषज्ञता हासिल करना।
- संगीत की उच्च शिक्षा में बेहतर सम्भावनाओं की तलाश और उसके आधार पर शिक्षक, शोधकर्ता तथा कलाकार के रूप में उपयोगी भूमिका का निर्वाह।
- विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में विषय दक्षता एवं विषय के ज्ञान के आधार पर सफलता का सूत्रपात।

2. प्रासंगिकता/उपयोगिता – आज के समय में शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करना चाहता है चाहे उसका माध्यम कुछ भी हो। इस परिदृश्य में दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण प्रणाली लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी साबित हो रही है। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि यह समयबद्ध व स्थानबद्ध नहीं है। संगीत विषय एक पारंपरिक विषय के रूप में विकसित हुआ है और जिसका ज्ञान गुरू-शिष्य परंपरा के अन्तर्गत दिया जाता रहा। इस कारण संगीत विषय सर्वसुलभ नहीं हो पाया और इससे कई संगीत जिज्ञासु इस ज्ञान से वंचित हो जाते थे। संस्थागत शिक्षण प्रणाली के आने से संगीत विषय की उपलब्धता में थोडा बदलाव आया किन्तु उम्र, देश, काल एवं विभिन्न कारणों से संस्थागत शिक्षण प्रणाली भी उतनी लोकप्रिय नहीं हो पाई। ऐसे में संगीत सीखने के इच्छुक विद्यार्थियों को दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण प्रणाली के घटकों सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार माध्यमों से सीखने का एक नवीन माध्यम प्राप्त हुआ है जो उनकी सुविधानुरूप भी है एवं अन्य शिक्षण प्रणाली की अपेक्षा सर्वसुलभ भी।

3. शिक्षार्थियों के समूह की प्रकृति – संगीत का यह पाठ्यक्रम उन शिक्षार्थियों को केन्द्र में रखकर विकसित किया गया है जो संगीत के क्षेत्र में शिक्षक, शोधकर्ता, कलाकार के रूप में तथा अन्य संबंधित क्षेत्र में अपने को स्थापित करना चाहते हैं किन्तु सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य कारणों से संगीत की उच्च शिक्षा से वंचित हैं या बीच में ही संगीत शिक्षा छोड़ चुके हैं। संगीत सीखने के इच्छुक शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम से संबंधित स्वअध्ययन पाठ्य सामग्री, दृश्य एवं श्रृव्य व्याख्यान, परामर्श सत्रों, कार्यशालाओं, सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों(जैसे कम्प्यूटर,

इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार के माध्यम से बिना किसी बन्धन के कहीं भी कभी भी ज्ञान अर्जित कर सकता हैं।

4. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण माध्यम से संचालित पाठ्यक्रम का औचित्य – मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण माध्यम से इस पाठ्यक्रम को संचालित कर शिक्षार्थी को अन्य शिक्षण प्रणाली की अपेक्षा संगीत विषय की बारीकियों से सरलता से अवगत कराया जा सकता है और संबंधित क्षेत्र में अधिक दक्ष बनाया जा सकता है। इसका प्रमुख कारण है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण माध्यम में ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न माध्यम जैसे स्वअध्ययन पाठ्य सामग्री, दृश्य एवं श्रृव्य व्याख्यान आदि शिक्षार्थी को केन्द्र में रखकर तैयार किए जाते हैं एवं सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरण (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि), संचार माध्यमों आदि शिक्षार्थी के अनुसार कार्य करते हैं।

5. निर्देशात्मक रूपरेखा – उक्त पाठ्यक्रम के अन्तर्गत संगीत की तीन विधाएं(गायन, स्वरवाद्य एवं तबला) सम्मिलित की गई हैं। पाठ्यक्रम की अवधि 2 से 6 वर्ष तक की होगी। पाठ्यक्रम कुल 60 श्रेयांक(30 प्रति वर्ष) का होगा। पाठ्यक्रम में प्रत्येक वर्ष में कुल 4 कोर्स(पेपर) होंगे जिनमें से 2 सैद्धान्तिक और 2 प्रयोगात्मक कोर्स होंगे।

संगीत(गायन) प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम						
क्रम.	प्रश्नपत्र का नाम एवं कोड	श्रेयांक	अंक	समयावधि		पाठ्यक्रम वितरण माध्यम
				न्यूनतम	अधिकतम	
1.	संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र एम0ए0एम0 – 101	04	100	02 वर्ष	06 वर्ष	स्वअध्ययन सामग्री, ऑडियो-वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री
2.	गायन- रागों और तालों का अध्ययन I एम0ए0एम0वी0 - 102	04	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	प्रयोगात्मक – I एम0ए0एम0वी0 - 103	08	200	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	प्रयोगात्मक – 2 एम0ए0एम0वी0 - 104	14	350	02 वर्ष	06 वर्ष	"
संगीत(गायन) द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम						
1.	संगीत शास्त्र एम0ए0एम0 - 201	03	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
2.	गायन-रागों और तालों का अध्ययनII एम0ए0एम0वी0 - 202	03	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	प्रयोगात्मक – I एम0ए0एम0वी0 - 203	10	200	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	प्रयोगात्मक – 2 एम0ए0एम0वी0 - 204	14	350	02 वर्ष	06 वर्ष	"

संगीत(स्वरवाद्य) प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम

क्रम.	प्रश्नपत्र का नाम एवं कोड	श्रेयांक	अंक	समयावधि		पाठ्यक्रम वितरण माध्यम
				न्यूनतम	अधिकतम	
1.	संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र एम0ए0एम0 – 101	04	100	02 वर्ष	06 वर्ष	स्वअध्ययन सामग्री, ऑडियो-वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री
2.	स्वरवाद्य- रागों और तालों का अध्ययन I एम0ए0एम0आई0 - 102	04	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	प्रयोगात्मक – 1 एम0ए0एम0आई0 - 103	08	200	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	प्रयोगात्मक – 2 एम0ए0एम0आई0 - 104	14	350	02 वर्ष	06 वर्ष	"

संगीत(स्वरवाद्य) द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम

क्रम.	प्रश्नपत्र का नाम एवं कोड	श्रेयांक	अंक	न्यूनतम	अधिकतम	पाठ्यक्रम वितरण माध्यम
1.	संगीत शास्त्र एम0ए0एम0 - 201	03	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
2.	स्वरवाद्य-रागों और तालों का अध्ययनII एम0ए0एम0आई0 - 202	03	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	प्रयोगात्मक – 1 एम0ए0एम0आई0 - 203	10	200	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	प्रयोगात्मक – 2 एम0ए0एम0आई0 - 204	14	350	02 वर्ष	06 वर्ष	"

संगीत(तबला) प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम

क्रम.	प्रश्नपत्र का नाम एवं कोड	श्रेयांक	अंक	समयावधि		पाठ्यक्रम वितरण माध्यम
				न्यूनतम	अधिकतम	
1.	संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र एम0ए0एम0 – 101	04	100	02 वर्ष	06 वर्ष	स्वअध्ययन सामग्री, ऑडियो-वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री
2.	तालों का अध्ययन I एम0ए0एम0टी0 - 102	04	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	प्रयोगात्मक – 1 एम0ए0एम0टी0 - 103	08	200	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	प्रयोगात्मक – 2 एम0ए0एम0टी0 - 104	14	350	02 वर्ष	06 वर्ष	"

संगीत(तबला) द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम

क्रम.	प्रश्नपत्र का नाम एवं कोड	श्रेयांक	अंक	न्यूनतम	अधिकतम	पाठ्यक्रम वितरण माध्यम
1.	संगीत शास्त्र एम0ए0एम0टी0 - 201	03	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
2.	तालों का अध्ययन II एम0ए0एम0टी0 - 202	03	100	02 वर्ष	06 वर्ष	"
3.	प्रयोगात्मक – 1 एम0ए0एम0टी0 - 203	10	200	02 वर्ष	06 वर्ष	"
4.	प्रयोगात्मक – 2 एम0ए0एम0टी0 - 204	14	350	02 वर्ष	06 वर्ष	"

कुल सचिव
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

उक्त पाठ्यक्रम के संचालन हेतु न्यूनतम 3 शिक्षक एवं 2 शिक्षणेत्तर कर्मचारी (संगतकर्ता) की आवश्यकता होगी।

6. प्रवेश, वितरण एवं मूल्यांकन विधि –

क. प्रवेश योग्यता - अ) बी0ए0 {संगीत (गायन/स्वर वाद्य/तबला) एक विषय अनिवार्य} में 45% एवं संगीत विषय में 55%।

ब) बी0एस0सी0/बी0कॉम0/बी0ए0(संगीत विषय के बिना) के साथ विशारद/संगीत प्रभाकर/संगीत विद आदि(55% के साथ)।

पाठ्यक्रम अवधि - 2 वर्ष से 6 वर्ष

पाठ्यक्रम माध्यम - हिन्दी

पाठ्यक्रम श्रेयांक - 60(30 प्रति वर्ष)

शुल्क संरचना -

वर्ष	पाठ्यक्रम शुल्क	परीक्षा शुल्क		कुल
		सैद्धान्तिक परीक्षा	प्रयोगात्मक परीक्षा	
I वर्ष	5000	300	1000	6300
II वर्ष	5000	300	1000	6300
कुल	10000	600	2000	12600

ख. वितरण – संगीत संबंधित पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित केवल उन्हीं अध्ययन केन्द्रों में संचालित किया जाएगा जहाँ पर संगीत विषय के शिक्षक, संगीत के वाद्य यंत्र तथा अन्य संगीत विषय संबंधित सामग्री उपलब्ध हो। संगीत के शास्त्र पक्ष हेतु शिक्षार्थियों को स्वअध्ययन पाठ्य सामग्री मुद्रित रूप में दी जाएगी। दृश्य एवं श्रृव्य व्याख्यान भी उपलब्ध कराएं जाऐंगे जिनकी सहायता से शिक्षार्थी विषय को सूक्ष्मता एवं गहनता से समझ सकने में सक्षम हो। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न उपकरणों एवं माध्यमों से भी विषय को समझाने का प्रयास किया जाएगा। शिक्षार्थियों की समस्याओं के निराकरण हेतु परामर्श सत्रों का आयोजन किया जाएगा एवं प्रत्येक वर्ष कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएंगी।

ग. मूल्यांकन – शिक्षार्थियों के मूल्यांकन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मूल्यांकन की तीन प्रणालीयों सत्रीय कार्य, सैद्धान्तिक परीक्षा एवं प्रयोगात्मक परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इसके साथ ही साथ परामर्श सत्रों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से भी मूल्यांकन का कार्य किया जाएगा।

7. प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय सहायता – संगीत विषय केवल उन्हीं अध्ययन केन्द्रों में संचालित किया जाएगा जहाँ पर संगीत विषय के शिक्षक, संगीत के वाद्य यंत्र तथा अन्य संगीत विषय संबंधित सामग्री उपलब्ध हो। अध्ययन केन्द्रों में परामर्श सत्रों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षार्थियों को संगीत विषय के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ

प्रयोगात्मक पक्ष का भी ज्ञान दिया जाएगा। इसके साथ ही साथ शिक्षार्थियों के लिए पुस्तकालय की भी व्यवस्था होगी जहाँ वह संगीत के विभिन्न पक्षों का स्वाध्याय के माध्यम से भी ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

8. पाठ्यक्रम की अनुमानित लागत –

अ) इकाई लेखन	-	रू0 350000/-
ब) इकाई संपादन	-	रू0 175000/-
स) इकाई टंकण	-	रू0 28000/-
द) कुल	-	रू0 553000/-

9. गुणवत्ता प्रणाली एवं परिणाम – संगीत विषय के इस पाठ्यक्रम के भविष्यगामी परिणाम निम्नलिखित होंगे :-

- शिक्षार्थी संगीत विषय की विविध विधाओं तथा शास्त्र की समुचित विशेषज्ञता हासिल कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी संगीत विषय के अन्तर्गत विद्यालयों एवं संस्थाओं में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होंगे।
- शिक्षार्थी कलाकार के रूप में भी अपने को स्थापित कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी संगीत को स्वरोजगार(संगीत विद्यालय) के रूप में अपनाकर आर्थिक रूप से सक्षम हो सकेंगे।
- विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में विषय दक्षता एवं विषय के ज्ञान के आधार पर सफलता का सूत्रपात।

स्व-अध्ययन पाठ्य सामग्री के परिवर्द्धन–संवर्धन हेतु समय-समय पर विषय वस्तु की समीक्षा की जाएगी तथा विषय को अधुनातन रूप में परखा जाएगा। इच्छुक विद्यार्थियों के लिए पाठयक्रम का निरन्तर प्रसार-प्रचार किया जाएगा।

कुल सचिव
[illegible] मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)